E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(4): 37-40
Received: 04-02-2023
Accepted: 10-04-2023

अंगद प्रसाद मौर्य
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, जिला रीवा, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अंगद प्रसाद मौर्य
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'आनलाइन' शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षकों के शिक्षण कौशल का समीक्षात्मक अध्ययन

अंगद प्रसाद मौर्य, डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i4a.974

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'आनलाइन' शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षकों के शिक्षण कौशल का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 5 शहरी – 5 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 45 विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य और 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। न्यादर्श में चयनित 1305 अभिमतदाताओं में से 36.17 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत मध्यमान 53.67 है तथा मानक विचलन 20.50 है और शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 64.78 है तथा मानक विचलन 17.89 है।

कुटशब्दः रीवा जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, ऑनलइन, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षक, शिक्षण कौशल।

1. प्रस्तावना
शिक्षा का यह क्षेत्र भी शोध की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है, परन्तु भारतवर्ष में इस क्षेत्र पर शोध–कार्य बहुत हुए। एम.एड. स्तर पर कुछ कार्य व्यावसायिक अभिरुचियों तथा शैक्षिक निष्पत्तियों पर किये गये हैं साथ ही वृतिक विकास शोध कार्य किये जायें। इस क्षेत्र में ऐसे शोध कार्यों को करने की आवश्यकता है जिससे निर्देशन विधियों का भारतीय सन्दर्भ में विकास किया जाये। इसी प्रकार व्यावसायिक अभिरुचियों का अध्ययन अपनी परिस्थिति में किया जाये।
ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली (ई–लर्निंग) को सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है। सूचना एवं संचार प्रणालियां, चाहे इनमें नेटवर्क की व्यवस्था हो या न हो, शिक्षा प्रक्रिया को कार्यान्वित करने वाले विशेष माध्यम के रूप में अपनी सेवा प्रदान करती हैं
ई–शिक्षा अनिवार्य रूप से कौशल एवं ज्ञान का कंप्यूटर एवं नेटवर्क समर्थित अंतरण है। ई–शिक्षा इलेक्ट्रानिक अनुप्रयोगों और सीखने की प्रक्रियाओं के उपयोग को संदर्भित करता है। ई–शिक्षा के अनुप्रयोगों और प्रक्रियाओं में वेब–आधारित शिक्षा, कंप्यूटर–आधारित शिक्षा, आभासी कक्षाएं और डिजीटल सहयोग शामिल है। पाठ्य–सामग्रियों का वितरण इंटरनेट, आडियो या वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी–रोम के माध्यम से किया जाता है। इसे खुद ब खुद या अनुदेशक के नेतृत्व में किया जा सकता है और इसका माध्यम पाठ, छवि, एनीमेशन, स्ट्रीमिंग वीडियो और आडियो है।
शिक्षण की कला में केवल ज्ञान का एक से दूसरे में सरल हस्तांतरण शामिल नहीं है। इसके बजाय, यह एक जटिल प्रक्रिया है जो सीखने की प्रक्रिया को सुगम और प्रभावित करती है। एक शिक्षक की गुणवत्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जाता है कि छात्र उसके शिक्षण से कितना समझते हैं। प्राथमिक शिक्षण कौशल प्राप्त करने के लिए कक्षाओं को सीखने के मंच के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है। विशिष्ट शिक्षण कौशल में शिक्षकों का प्रशिक्षण शिक्षा कार्यक्रमों में एक बड़ी चुनौती है। शिक्षण के लिए शैक्षणिक कौशल केवल अधिक संरचित और सस्ती संकाय प्रशिक्षण तकनीकों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'आनलाइन' शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षकों के शिक्षण कौशल का समीक्षात्मक अध्ययन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। सूक्ष्म शिक्षण शिक्षण कौशल सीखने के लिए एक शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक है। यह कौशल विकसित करने के लिए वास्तविक शिक्षण स्थिति का उपयोग करता है और शिक्षण की कला के बारे में गहन ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है।
2. "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'आनलाइन' शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षकों के शिक्षण कौशल का समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोध हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार व प्रश्नावली पत्रक का उपयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 5 शहरी – 5 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 45 विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य और 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित 'आनलाइन' शिक्षण प्रक्रिया का शिक्षकों के शिक्षण कौशल का समीक्षात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], गुप्ता, एस.पी. (1997)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], आर्येन्दु, अखिलेश (2007)[5], कुमार, डॉ. संजय (2009)[6], कुमारी, शारदा (2005)[7], जड़िया, कमलेश कुमार एवं जय सिंह (2019)[8], त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007)[9]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की

वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1: "शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत प्रभाव पड़ रहा है					
			कम		अधिक		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	45	24	53.33	10	22.22	11	24.44
2.	शिक्षक	180	71	39.44	61	33.89	48	26.67
3.	अभिभावक	180	67	37.22	61	33.89	52	28.89
4.	छात्र	900	310	34.44	280	31.11	310	34.44
योग		1305	472	36.17	412	31.57	421	32.26
काई वर्ग (χ^2)			$\chi^2 = 4.81$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 45 प्रधानाध्यापक, 180 शिक्षक, 180 अभिभावक व 900 छात्रो से शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 53.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 39.44 प्रतिशत शिक्षक, 37. 22 प्रतिशत अभिभावक व 34.44 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है।

न्यादर्श में चयनित 1305 अभिमतदाताओं में से 36.17 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है, 31.57 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 32.26 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर नहीं है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 4.81 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से कम है अर्थात सार्थक नहीं है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

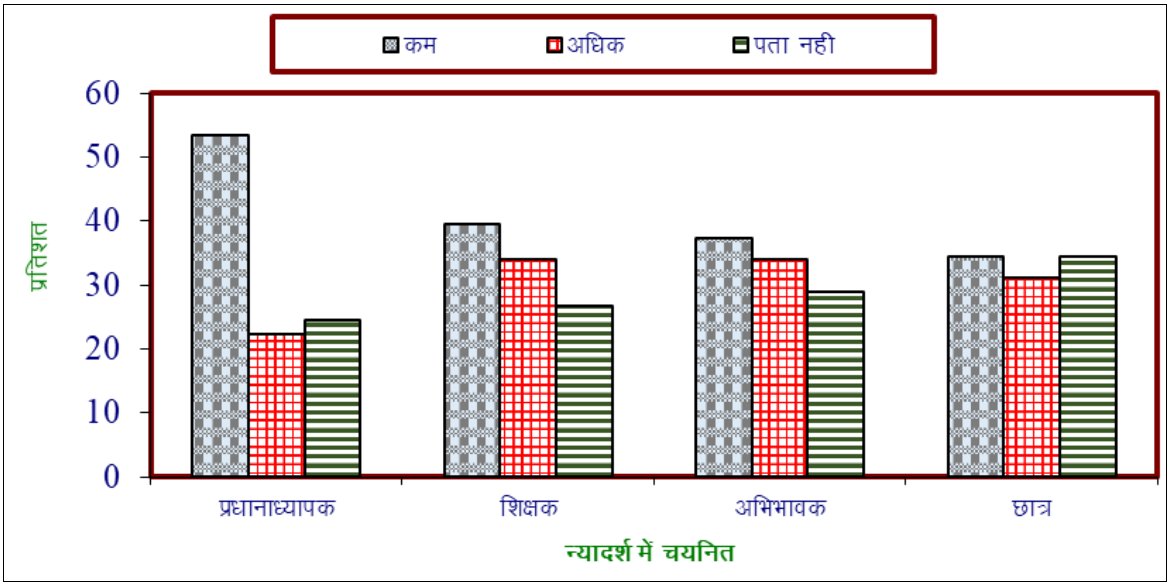

आरेख 1: शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अध्ययन

परिकल्पना क्र. – 2: "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (छ)		90	90
मध्यमान (ड)		53.67	64.78
मानक विचलन (व)		20.50	17.89
क्रान्तिक निष्पत्ति (ष्जष्द्ध		3.87	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = (N_1-1) + (N_2-1)
df = (90-1) + (90-1) = 89 + 89 = 178

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत मध्यमान 53.67 है तथा मानक विचलन 20.50 है और शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 64.78 है तथा मानक विचलन 17.89 है।

178 कि पर सार्थकता के लिए ष्जष् का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त ष्जष् का मान 3.87 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 2 अस्वीकृत होती है।

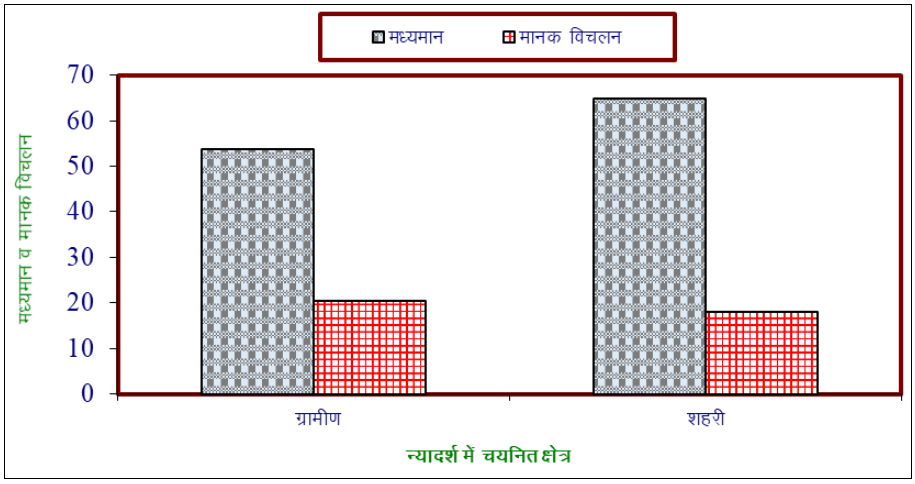

आरेख 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

12. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के 53.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 39.44 प्रतिशत शिक्षक, 37.22 प्रतिशत अभिभावक व 34.44 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ रहा है।

शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

13. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. गुप्ता, एस.पी. (1997): सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवना, इलाहाबाद.
3. कपिल, एच.के. (1996): सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988): राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. आर्येन्दु, अखिलेश (2007): प्राथमिक शिक्षा और सरकारी कार्य योजना, 'कुरूक्षेत्र', मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष–53, अंक–11 पृ0–10–12।
6. कुमार, डॉ. संजय (2009): 'सर्व शिक्षा अभियान' अल्फा पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
7. कुमारी, शारदा (2005): प्राथमिक स्तर पर आंकलन की प्रक्रिया, 'प्राथमिक शिक्षक', छण्ब्ण्म्ण्त्ण्ज्ण की त्रैमासिक पत्रिका, वर्ष 30, अंक +2, पृ. 46–50।
8. जड़िया, कमलेश कुमार एवं जय सिंह. "छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Education and Research. 2019 March;4(2):80-82.
9. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007): भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.